Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:1(1), January: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2023
Publication Date:10th February 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/01.01.20.1.23.12
www.ijmer.in

आधुनिक हिन्दी साहित्य के स्त्री विमर्श में ममता कालिया तथा अन्य रचनाकारों का अवदान

डॉ. टी. सुमति
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी), गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, नरसमपेट, तेलंगाना।

सार

आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श एक महत्वपूर्ण साहित्यिक एवं सामाजिक धारा के रूप में विकसित हुआ है, जिसने स्त्री के अधिकार, अस्मिता, आत्मसम्मान, समानता तथा स्वतंत्र अस्तित्व के प्रश्नों को केंद्र में स्थापित किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में आधुनिक हिन्दी साहित्य के स्त्री विमर्श के विकास, उसकी अवधारणा तथा प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करते हुए विशेष रूप से ममता कालिया के साहित्य का विश्लेषण किया गया है। ममता कालिया ने अपने कथा साहित्य में मध्यवर्गीय स्त्री के जीवन–संघर्ष, आर्थिक स्वावलंबन, पारिवारिक संबंधों, आत्मनिर्णय तथा सामाजिक विसंगतियों का यथार्थपरक चित्रण किया है। साथ ही कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, उषा प्रियंवदा तथा मृदुला गर्ग जैसी रचनाकारों के साहित्यिक अवदान का भी समालोचनात्मक विवेचन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इन रचनाकारों ने स्त्री को केवल संवेदना का विषय न मानकर सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया है तथा हिन्दी साहित्य को नई वैचारिक दिशा प्रदान की है।

मुख्य शब्द: स्त्री विमर्श, ममता कालिया, आधुनिक हिन्दी साहित्य, नारी चेतना, अस्मिता, समानता, सामाजिक परिवर्तन।

1. भूमिका

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, क्योंकि समाज में घटित होने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों का प्रतिबिंब साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रत्येक युग का साहित्य उस समय की जीवन–स्थितियों, मान्यताओं, संघर्षों तथा सामाजिक चेतना का सजीव दस्तावेज होता है। आधुनिक युग में शिक्षा के प्रसार, औद्योगीकरण, नगरीकरण, लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की प्रगति तथा सामाजिक सुधार आंदोलनों के परिणामस्वरूप भारतीय समाज में व्यापक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों का सर्वाधिक प्रभाव स्त्री की सामाजिक स्थिति, भूमिका और अधिकारों पर पड़ा। परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य में स्त्री के जीवन, उसकी समस्याओं, संघर्षों, आकांक्षाओं तथा अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों पर गंभीर चिंतन प्रारम्भ हुआ, जिसे स्त्री विमर्श के रूप में जाना जाता है।

स्त्री विमर्श का उद्देश्य केवल स्त्री की समस्याओं, पीड़ाओं अथवा शोषण का चित्रण करना नहीं है, बल्कि उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व, सामाजिक अधिकार, आर्थिक स्वावलंबन, सांस्कृतिक पहचान, आत्मसम्मान तथा मानवीय गरिमा को स्थापित करना भी है। यह विमर्श समाज में व्याप्त लैंगिक असमानताओं, पितृसत्तात्मक सोच, सामाजिक रूढ़ियों तथा भेदभावपूर्ण परम्पराओं की आलोचनात्मक समीक्षा करते हुए समानता, न्याय

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:1(1), January: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2023
Publication Date:10th February 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/01.01.20.1.23.12
www.ijmer.in

और स्वतंत्रता की स्थापना का समर्थन करता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री अब केवल त्याग, सहनशीलता और समर्पण की पारंपरिक छवि तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह संघर्षशील, आत्मनिर्भर, शिक्षित, जागरूक तथा अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने वाली सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उभरकर सामने आई है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में अनेक महिला एवं पुरुष रचनाकारों ने स्त्री जीवन के विविध पक्षों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। विशेष रूप से ममता कालिया, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, उषा प्रियंवदा तथा मृदुला गर्ग जैसी रचनाकारों ने स्त्री के अनुभवों, सामाजिक यथार्थ, पारिवारिक संबंधों, आर्थिक संघर्षों, आत्मसम्मान तथा अस्मिता के प्रश्नों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। इन लेखिकाओं की रचनाएँ न केवल स्त्री जीवन की वास्तविकताओं को उद्घाटित करती हैं, बल्कि समाज में समानता, न्याय और मानवीय मूल्यों की स्थापना की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध–पत्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के स्त्री विमर्श में ममता कालिया तथा अन्य प्रमुख रचनाकारों के साहित्यिक अवदान का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

2. साहित्य की समीक्षा

कुमारी (२०२५) ने आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि समकालीन हिन्दी कथाकारों ने स्त्री की अस्मिता, आत्मसम्मान, समानता तथा सामाजिक अधिकारों को साहित्य के केंद्र में स्थापित किया। अध्ययन में यह भी प्रतिपादित किया गया कि आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री अब केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व और आत्मनिर्णय के साथ उभरकर सामने आई। उन्होंने निष्कर्ष दिया कि आधुनिक हिन्दी साहित्य ने स्त्री चेतना को सशक्त स्वर प्रदान करते हुए सामाजिक परिवर्तन और लैंगिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मोड़ी (२०१८) ने आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माण, विकास तथा साहित्यिक परंपराओं का ऐतिहासिक अध्ययन किया। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों ने आधुनिक हिन्दी साहित्य की विचारधारा तथा अभिव्यक्ति को गहराई से प्रभावित किया। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया कि आधुनिक हिन्दी साहित्य ने समाज में उभरते नए विमर्शों, विशेषकर स्त्री चेतना और सामाजिक समानता से जुड़े प्रश्नों को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ताहा (२०२३) ने भारतीय साहित्य में स्त्री, भाषा और सामाजिक पहचान के अंतर्संबंधों का विश्लेषण किया। उन्होंने महिलाओं की सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक पहचान तथा भाषायी अभिव्यक्ति के माध्यम से स्त्री अनुभवों को समझने का प्रयास किया। अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया कि साहित्य स्त्री की

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:1(1), January: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2023
Publication Date:10th February 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/01.01.20.1.23.12
www.ijmer.in

पहचान, सामाजिक स्थिति तथा उसके अधिकारों के प्रति समाज में जागरूकता उत्पन्न करने का प्रभावी माध्यम सिद्ध हुआ और भाषा ने स्त्री की अभिव्यक्ति को नई दिशा प्रदान की।

निज्हावन (२०१७) ने हिन्दी साहित्य के राष्ट्रीय स्वरूप के निर्माण में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन किया। उन्होंने साहित्य और दृश्य माध्यमों के आधार पर स्त्री की बदलती सामाजिक छवि तथा उसकी वैचारिक उपस्थिति का विश्लेषण किया। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि महिलाओं की सक्रिय साहित्यिक भागीदारी ने राष्ट्रीय चेतना के साथ–साथ स्त्री चेतना के विकास को भी गति प्रदान की तथा हिन्दी साहित्य को व्यापक सामाजिक दृष्टि प्रदान की।

गुप्ता (२००८) ने हिन्दी साहित्य में दलित स्त्री के चित्रण का ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने यह दर्शाया कि साहित्य में दलित स्त्री का चित्रण अनेक सामाजिक, जातिगत तथा लैंगिक पूर्वाग्रहों से प्रभावित रहा। अध्ययन में जाति और लिंग आधारित असमानताओं का विश्लेषण करते हुए दलित स्त्री की वास्तविक सामाजिक स्थिति, संघर्ष तथा अधिकारों से जुड़े प्रश्नों को प्रमुखता दी गई। उन्होंने निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि हिन्दी साहित्य में दलित स्त्री की वास्तविक पहचान और उसके अनुभवों को अधिक संवेदनशील एवं यथार्थपरक दृष्टि से प्रस्तुत किए जाने की आवश्यकता है।

3. स्त्री विमर्श की अवधारणा

स्त्री विमर्श आधुनिक हिन्दी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक अवधारणा है, जिसका संबंध स्त्री के जीवन, अधिकार, अस्तित्व, समानता तथा स्वतंत्रता से जुड़े प्रश्नों से है। इसका उद्देश्य केवल स्त्री की समस्याओं का वर्णन करना नहीं, बल्कि उसे समाज में समान अधिकार, सम्मान और आत्मनिर्णय का स्थान दिलाना भी है। यह पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था, लैंगिक असमानता तथा रूढ़िवादी मान्यताओं की समीक्षा करते हुए स्त्री की गरिमा और अस्मिता की स्थापना का समर्थन करता है।

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श का विकास सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा के प्रसार तथा आधुनिक चेतना के प्रभाव से हुआ। आधुनिक रचनाकारों ने स्त्री को केवल पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित न रखकर एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। इस दृष्टि से स्त्री विमर्श सामाजिक समानता और मानवीय मूल्यों की स्थापना का सशक्त माध्यम बनकर उभरा है।

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श निम्नलिखित आधारों पर विकसित हुआ है–

- **स्त्री की अस्मिता का प्रश्न** – स्त्री की स्वतंत्र पहचान और आत्मसम्मान पर बल।
- **शिक्षा एवं आर्थिक स्वावलंबन** – शिक्षा और आत्मनिर्भरता को सशक्तिकरण का आधार माना गया।
- **सामाजिक समानता** – स्त्री और पुरुष के समान अधिकारों की वकालत।
- **पारिवारिक संबंधों की पुनर्व्याख्या** – परिवार में समान भागीदारी और सम्मान की आवश्यकता।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:1(1), January: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2023
Publication Date:10th February 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/01.01.20.1.23.12
www.ijmer.in

- **विवाह एवं दाम्पत्य संबंधों की नई दृष्टि** – पारस्परिक विश्वास और समानता पर आधारित संबंध।
- **स्त्री की आत्मनिर्णय क्षमता** – जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं लेने का अधिकार।
- **लैंगिक न्याय तथा सामाजिक परिवर्तन** – भेदभावमुक्त और समतामूलक समाज की स्थापना।

इस प्रकार, स्त्री विमर्श आधुनिक हिन्दी साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है, जिसने स्त्री के जीवन, संघर्ष और अधिकारों को नई दृष्टि से प्रस्तुत करते हुए समाज में समानता और न्याय की भावना को सुदृढ़ किया है।

4. आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श का विकास

भारतीय समाज में लंबे समय तक स्त्री की भूमिका परंपरागत सामाजिक मान्यताओं और पितृसत्तात्मक व्यवस्था से प्रभावित रही। स्त्री को मुख्यतः परिवार तक सीमित रखा गया तथा शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक निर्णयों में उसकी भागीदारी सीमित थी। उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार आंदोलनों, महिला शिक्षा के विस्तार, स्वतंत्रता आंदोलन तथा भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त समान अधिकारों ने स्त्री की सामाजिक स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य में भी स्त्री के जीवन, अधिकारों, अस्मिता तथा स्वतंत्र अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों को गंभीरता से अभिव्यक्त किया जाने लगा। साहित्यकारों ने स्त्री को केवल करुणा या त्याग की प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र, संघर्षशील और जागरूक व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री केवल सहायक पात्र के रूप में नहीं रही, बल्कि कथा, उपन्यास, नाटक तथा अन्य साहित्यिक विधाओं का केंद्रीय विषय बन गई। महिला रचनाकारों के साथ–साथ अनेक पुरुष साहित्यकारों ने भी स्त्री के अनुभवों, संघर्षों, सामाजिक यथार्थ, पारिवारिक संबंधों तथा बदलती सामाजिक परिस्थितियों को अपनी रचनाओं में प्रमुख स्थान दिया। विशेष रूप से साठोत्तरी हिन्दी साहित्य में स्त्री की आत्मचेतना, शिक्षा, रोजगार, आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक समानता जैसे विषयों को व्यापक रूप से अभिव्यक्ति मिली। परिणामस्वरूप स्त्री विमर्श आधुनिक हिन्दी साहित्य की एक सशक्त साहित्यिक धारा के रूप में विकसित हुआ, जिसने समाज में स्त्री की बदलती भूमिका और उसके अधिकारों पर गंभीर विचार–विमर्श को प्रोत्साहित किया।

समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श ने विशेष रूप से निम्नलिखित विषयों को प्रमुखता प्रदान की–

- **घरेलू हिंसा तथा पारिवारिक शोषण** – परिवार के भीतर स्त्री पर होने वाले शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक अत्याचारों का यथार्थ चित्रण।
- **कार्यस्थल की चुनौतियाँ और समान अवसर** – रोजगार के क्षेत्र में लैंगिक भेदभाव, असमान वेतन तथा कार्यस्थल पर सम्मान और सुरक्षा के प्रश्न।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:1(1), January: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2023
Publication Date:10th February 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/01.01.20.1.23.12
www.ijmer.in

- **आर्थिक स्वतंत्रता एवं आत्मनिर्भरता** – स्त्री की आर्थिक स्वायत्तता को उसके आत्मसम्मान और सशक्तिकरण का आधार माना गया।
- **लैंगिक भेदभाव और सामाजिक असमानता** – समाज में स्त्री और पुरुष के बीच व्याप्त असमानताओं तथा भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण का विरोध।
- **सामाजिक रूढ़ियाँ तथा परंपरागत मान्यताओं का विरोध** – रूढ़िवादी मान्यताओं, पितृसत्तात्मक सोच और सामाजिक बंधनों की आलोचनात्मक समीक्षा।
- **आत्मसम्मान और स्वतंत्र पहचान** – स्त्री के स्वतंत्र व्यक्तित्व, अस्मिता तथा आत्मनिर्णय के अधिकार को महत्व प्रदान किया गया।
- **वैवाहिक संबंधों की जटिलताएँ एवं दाम्पत्य जीवन के नए आयाम** – विवाह संस्था, पारिवारिक संबंधों तथा बदलते दाम्पत्य मूल्यों का यथार्थ विश्लेषण।
- **मातृत्व एवं व्यक्तिगत पहचान के बीच संतुलन** – स्त्री की पारिवारिक जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के मध्य संतुलन स्थापित करने की चुनौतियों को प्रमुखता दी गई।

इस प्रकार आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श ने स्त्री के जीवन से जुड़े विविध सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक पक्षों को नई दृष्टि से प्रस्तुत करते हुए साहित्य को अधिक यथार्थपरक और संवेदनशील बनाया है। इस विमर्श ने न केवल स्त्री की समस्याओं और संघर्षों को स्वर दिया, बल्कि समानता, सामाजिक न्याय, आत्मसम्मान तथा मानवीय गरिमा जैसे मूल्यों की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यही कारण है कि आज स्त्री विमर्श आधुनिक हिन्दी साहित्य का एक सशक्त और अनिवार्य साहित्यिक आयाम माना जाता है।

4.1 ममता कालिया का साहित्यिक परिचय

ममता कालिया आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की प्रमुख एवं प्रतिष्ठित रचनाकारों में अग्रणी स्थान रखती हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, संस्मरण, निबंध तथा अन्य गद्य विधाओं के माध्यम से समकालीन भारतीय समाज के विविध सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक पक्षों का अत्यंत यथार्थपरक चित्रण किया है। उनका साहित्य विशेष रूप से शहरी मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री की मानसिक संवेदनाओं, पारिवारिक संबंधों, सामाजिक विसंगतियों तथा बदलते जीवन–मूल्यों पर केंद्रित है। उन्होंने अपने लेखन में स्त्री के दैनिक जीवन, उसके संघर्ष, आत्मसम्मान, स्वतंत्र सोच तथा सामाजिक पहचान से जुड़े प्रश्नों को सहज और प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है।

ममता कालिया ने स्त्री को पारंपरिक आदर्शवादी और त्यागमयी छवि तक सीमित न रखकर उसे एक जागरूक, आत्मनिर्भर, संघर्षशील तथा आत्मसम्मानी व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी रचनाओं की नायिकाएँ जीवन की कठिन परिस्थितियों का साहसपूर्वक सामना करती हैं और अपने अधिकारों तथा

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:1(1), January: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2023
Publication Date:10th February 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/01.01.20.1.23.12
www.ijmer.in

सम्मान के प्रति सजग रहती हैं। वे स्त्री के जीवन में उत्पन्न होने वाले पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक द्वंद्वों का अत्यंत स्वाभाविक और यथार्थ चित्रण करती हैं, जिसके कारण उनकी रचनाएँ पाठकों को समाज की वास्तविक परिस्थितियों से परिचित कराती हैं।

ममता कालिया की भाषा सरल, सहज, व्यावहारिक तथा संवादधर्मी है। उन्होंने कृत्रिमता से दूर रहकर बोलचाल की भाषा का प्रभावी प्रयोग किया, जिससे उनकी रचनाएँ अधिक जीवंत, विश्वसनीय और पाठकों के निकट प्रतीत होती हैं। उनकी लेखन शैली में व्यंग्य, संवेदनशीलता, यथार्थबोध तथा सामाजिक चेतना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। इसी कारण उनका साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता, स्त्री चेतना और मानवीय मूल्यों की स्थापना का सशक्त साधन भी माना जाता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श को नई दिशा प्रदान करने वाली प्रमुख रचनाकारों में ममता कालिया का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है।

4.2 ममता कालिया के साहित्य में स्त्री विमर्श

ममता कालिया ने शिक्षित मध्यवर्गीय स्त्री के दैनिक जीवन, उसकी जिम्मेदारियों और संघर्षों का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी स्त्री पात्र परिवार और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती दिखाई देती हैं।

उनकी रचनाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता को स्त्री सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण आधार माना गया है। वे दर्शाती हैं कि आर्थिक रूप से सक्षम स्त्री अपने अधिकारों के प्रति अधिक सजग और आत्मविश्वासी होती है।

ममता कालिया की रचनाओं में स्त्री अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्र पहचान के प्रति सचेत दिखाई देती है। उनकी नायिकाएँ अन्याय, शोषण और भेदभाव का विरोध करते हुए अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष करती हैं।

उनके साहित्य में पारिवारिक संबंधों को समानता, सम्मान और संवाद की दृष्टि से देखा गया है। स्त्री को परिवार में केवल उत्तरदायित्व निभाने वाली नहीं, बल्कि समान अधिकार रखने वाले सदस्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

ममता कालिया की भाषा सरल, सहज, संवादात्मक और व्यंग्यप्रधान है। उनकी अभिव्यक्ति जीवन के निकट होने के कारण पाठक को सहज रूप से प्रभावित करती है। यही विशेषता उनके स्त्री विमर्श को अधिक प्रभावशाली और यथार्थपरक बनाती है।

5. अन्य प्रमुख रचनाकारों का अवदान

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:1(1), January: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2023
Publication Date:10th February 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/01.01.20.1.23.12
www.ijmer.in

ममता कालिया के अतिरिक्त आधुनिक हिन्दी साहित्य में अनेक महिला रचनाकारों ने स्त्री विमर्श को वैचारिक, सामाजिक और साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन लेखिकाओं ने स्त्री के जीवन, उसके संघर्ष, अधिकार, अस्मिता, आत्मसम्मान तथा सामाजिक स्थिति को अपने साहित्य का केंद्रीय विषय बनाकर स्त्री चेतना को नई दिशा प्रदान की। कृष्णा सोबती ने अपनी रचनाओं में स्त्री की स्वतंत्र चेतना, आत्मसम्मान और सामाजिक साहस को अत्यंत सशक्त रूप में प्रस्तुत किया।

उनकी स्त्री पात्र परंपरागत सामाजिक बंधनों को चुनौती देते हुए अपने अस्तित्व और अधिकारों के प्रति सजग दिखाई देती हैं। उन्होंने स्त्री को केवल परिवार की सीमाओं में बंधी हुई नहीं, बल्कि स्वतंत्र विचारों वाली आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया। मन्नू भंडारी ने मध्यवर्गीय परिवारों, दाम्पत्य संबंधों तथा बदलते सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में स्त्री की मानसिक संवेदनाओं, आत्मसम्मान और अस्तित्व–बोध का अत्यंत यथार्थ एवं संवेदनशील चित्रण किया। उनकी रचनाएँ स्त्री के अंतर्द्वंद्व, भावनात्मक संघर्ष तथा आत्मनिर्णय की प्रक्रिया को सहज भाषा में अभिव्यक्त करती हैं।

इसी प्रकार प्रभा खेतान ने स्त्री के मनोवैज्ञानिक संघर्ष, सामाजिक शोषण, अकेलेपन तथा आत्मपहचान से जुड़े प्रश्नों को गहनता से प्रस्तुत किया। उनके साहित्य में स्त्री के बाह्य संघर्षों के साथ–साथ उसके आंतरिक द्वंद्व और आत्मसम्मान की भावना को विशेष महत्व दिया गया है। चित्रा मुद्गल ने श्रमिक वर्ग की महिलाओं, आर्थिक विषमता, सामाजिक अन्याय तथा श्रमजीवी जीवन की कठिनाइयों को अपनी रचनाओं का प्रमुख विषय बनाया।

उन्होंने यह स्पष्ट किया कि स्त्री की समस्याएँ केवल पारिवारिक नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचनाओं से भी गहराई से जुड़ी हुई हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने ग्रामीण परिवेश की स्त्रियों के जीवन, उनके शोषण, संघर्ष, सामाजिक रूढ़ियों और आत्मसम्मान की भावना का प्रभावशाली चित्रण किया। उनकी रचनाओं में ग्रामीण स्त्री अपनी परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए स्वतंत्र पहचान बनाने का प्रयास करती दिखाई देती है।

इसके अतिरिक्त उषा प्रियंवदा ने आधुनिक शिक्षित स्त्री के भावनात्मक जीवन, अकेलेपन, पारिवारिक दायित्वों, व्यक्तिगत आकांक्षाओं तथा सामाजिक अपेक्षाओं के बीच उत्पन्न द्वंद्व को अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। वहीं मृदुला गर्ग ने स्त्री की वैचारिक स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय, सामाजिक रूढ़ियों के विरोध तथा स्वतंत्र चिंतन को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। उन्होंने स्त्री को एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया जो परंपरागत मान्यताओं पर प्रश्न उठाने का साहस रखती है और अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने की क्षमता रखती है। इन सभी रचनाकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री के जीवन के विविध आयामोंकृसामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक तथा वैचारिककृको व्यापक रूप से अभिव्यक्त किया है।

6. समकालीन परिप्रेक्ष्य

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:1(1), January: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2023
Publication Date:10th February 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/01.01.20.1.23.12
www.ijmer.in

इक्कीसवीं शताब्दी में स्त्री विमर्श का स्वरूप पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक, बहुआयामी और समकालीन सामाजिक यथार्थ से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। वर्तमान समय में स्त्री विमर्श केवल स्त्री–पुरुष समानता तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक न्याय, आर्थिक अधिकार, शिक्षा, सांस्कृतिक पहचान, कार्यस्थल पर समान अवसर, राजनीतिक सहभागिता, डिजिटल माध्यमों में स्त्री की सक्रिय उपस्थिति, पर्यावरणीय चेतना तथा लोकतांत्रिक अधिकारों जैसे अनेक महत्वपूर्ण विषयों को भी अपने अंतर्गत समाहित करता है।

वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, सूचना क्रांति तथा सामाजिक परिवर्तन ने स्त्री के जीवन, उसकी भूमिका और उसकी चुनौतियों को नए आयाम प्रदान किए हैं। आज की स्त्री शिक्षा, प्रशासन, राजनीति, साहित्य, विज्ञान, व्यापार, मीडिया तथा सामाजिक नेतृत्व जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है, जिसके परिणामस्वरूप समकालीन हिन्दी साहित्य में भी स्त्री अनुभवों की विविधता और गहराई स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

समकालीन हिन्दी साहित्य में ममता कालिया तथा कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, उषा प्रियंवदा और मृदुला गर्ग जैसी रचनाकारों का साहित्य आज भी अत्यंत प्रासंगिक बना हुआ है। इन लेखिकाओं ने स्त्री के वास्तविक जीवन, उसके संघर्ष, आत्मसम्मान, स्वतंत्र अस्तित्व, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक समानता तथा आत्मनिर्णय के अधिकार को यथार्थपरक और संवेदनशील दृष्टि से अभिव्यक्त किया है। उनकी रचनाएँ आज के समाज में भी लैंगिक असमानता, घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर भेदभाव, सामाजिक रूढ़ियों तथा स्त्री अधिकारों से जुड़े अनेक प्रश्नों पर गंभीर विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं।

वर्तमान समय में स्त्री विमर्श केवल साहित्यिक विमर्श नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन, संवैधानिक समानता और मानवीय मूल्यों की स्थापना का एक प्रभावशाली माध्यम बन चुका है। इस दृष्टि से इन रचनाकारों का साहित्य आज भी नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है तथा समतामूलक, न्यायपूर्ण और संवेदनशील समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श की निरंतर विकसित होती यह धारा भविष्य में भी सामाजिक चेतना, समानता और मानवीय गरिमा के सुदृढ़ीकरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती रहेगी।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श ने स्त्री के जीवन, संघर्ष, अधिकार और अस्मिता को नई वैचारिक दृष्टि प्रदान की है। ममता कालिया ने अपने साहित्य के माध्यम से शिक्षित मध्यवर्गीय स्त्री की वास्तविक समस्याओं, आत्मसम्मान, आर्थिक स्वावलंबन तथा स्वतंत्र अस्तित्व की आकांक्षा को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। इसके साथ ही कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, उषा प्रियंवदा तथा मृदुला गर्ग जैसी रचनाकारों ने स्त्री जीवन के विविध सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक पक्षों को साहित्य में स्थान देकर स्त्री विमर्श को

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :8.017(2023); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:12, ISSUE:1(1), January: 2023
Online Copy of Article Publication Available (2023 Issues)
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: 2nd January 2023
Publication Date:10th February 2023
Publisher: Sucharitha Publication, India
Digital Certificate of Publication: www.ijmer.in/pdf/e-CertificateofPublication-IJMER.pdf

DOI: http://ijmer.in.doi./2023/01.01.20.1.23.12
www.ijmer.in

व्यापक और समृद्ध बनाया है। समकालीन संदर्भ में इन रचनाकारों का साहित्य न केवल स्त्री चेतना को सुदृढ़ करता है, बल्कि समानता, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा जैसे मूल्यों की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श भारतीय समाज में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन और समतामूलक दृष्टि के विकास का एक सशक्त साहित्यिक आधार सिद्ध होता है।

संदर्भ

1. *कुमारी, ए. (2025). आधुनिक हिंदी कथा–साहित्य में नारीवादी विमशर्ः एक आलोचनात्मक अध्ययन। साहित्ययान जर्नल पी–आईएसएसएन 3117–5287 ई–आईएसएसएन 3117–5295, 1(01), 1–9.*
2. *मोदी, एस. एस. (2018). आधुनिक हिंदी का निर्माणः औपनिवेशिक उत्तर भारत में साहित्यिक अधिकार। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।*
3. *ताहा, एफ. (2023). महिलाएं, भाषा, और भाषा के रूप में महिलाएंः 1857 के बाद के भारतीय साहित्य और राष्ट्रीय विमर्श में मुस्लिम महिलाओं और उर्दू का विरोधाभासी घरेलूपन और कामुकता (डॉक्टरेट शोध–प्रबंध, यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड, कॉलेज पार्क)।*
4. *निझूंद, एस. (2017). महिलाएं और साहित्य का राष्ट्रीयकरणः एक हिंदी पत्रिका (1927द्1941) में कई अर्थों वाली समानांतर कथाओं के रूप में पाठ और छवि। जेंडर एंड हिस्ट्री, 29(1), 48–66.*
5. *गुप्ता, सी. (2008). दलित महिला का (गलत) चित्रणः औपनिवेशिक भारत के हिंदी उपदेशात्मक साहित्य में जाति और लिंग संबंधी रूढ़ियों का सुदृढ़ीकरण। इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू, 35(2), 101–124.*
6. *गुप्ता, सी. (2008). दलित महिला का (गलत) चित्रणः औपनिवेशिक भारत के हिंदी उपदेशात्मक साहित्य में जाति और लिंग संबंधी रूढ़ियों का सुदृढ़ीकरण। इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू, 35(2), 101–124.*
7. *मोदी, एस. एस. (2012). बीसवीं सदी की शुरुआत में हिंदी साहित्य का साहित्यिक आत्म–निर्णय और अनुशासनात्मक सीमाएं। साउथ एशिया रिसर्च, 32(3), 233–256.*
8. *डी ब्रुइन, टी. (2009). भारतीय नजरियाः आधुनिक हिंदी कथा–साहित्य में चरित्र–चित्रण और संवाद–धर्मिता। श्च्यूइंग ओवर द वेस्टश (पृष्ठ 183–211) में। ब्रिल।*
9. *वुइल, आर. ए. (2022). कृष्णा सोबती के साहित्य और लेखन–शास्त्र पर विचारः आधुनिक हिंदी साहित्य में सैद्धांतिक दृष्टिकोण और साहित्यिक अभ्यास (खंड 12)। वाल्टर डी ग्रुइटर ळउइभ – ब झळ।*
10. *मजूमदार, ओ. (2020)। अनुवाद में आधुनिक हिंदी साहित्य के बदलते महत्व की पड़ताल (डॉक्टरेट शोध–प्रबंध, बर्मिंघम विश्वविद्यालय)।*
11. *सिंह, एस. (2019)। हिंदी साहित्य में स्त्री–चेतना का उदय। इंडियन लिटरेचर, 63(2 (310), 28–33।*